क्लाइमेट स्मार्ट विलेज

डॉ अनुपम काश्यपि
वैज्ञानिक एफ
भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

अखिल भारतीय हिंदी संगोष्ठी
(4 - 5 दिसम्बर 2017), शिलांग

विषय सूची

- ➢ भूमिका
- ➢ क्लाइमेट स्मार्ट विलेज
  - ❖ उद्देश्य
  - ❖ जलवायु परिवर्तन की जोखिम कम करना
  - ❖ईकोसिस्टम / पारिस्थितिक तंत्र
  - ❖परियोजना की गतिविधियाँ
- ➢ उपसंहार -- हमारा नजरिया तथा प्रयास
- ➢ आभार

भूमिका

- तापमान बढ़ने के कारण वर्षा के समय एवं वितरण में असंतुलन देखा जा रहा है ।
- जिसके कारण मानसून विलंब, बाढ़, सूखा इत्यादि समस्याये बढ़ रही है जिससे फसल चक्र में भी बदलाव आ रहा है |
- कुछ फसलों का उत्पादन बढ़ रहा है एवं कुछ फसलों की अधिक तापमान के कारण पैदावार घट रही है |

वर्ष 2005, 2006 एवं 2007 में आंध्र प्रदेश में बाढ की आपदा

- भविष्य में भी तापमान बढ़ने से बारिश ज्यादा होगी एवं ‘वर्षा के दिन’ घट सकते है
- जिससे वर्षा की आक्रमकता बढेगी एवं अतिवृष्टि, ओला, पाला, शीत लहर जैसी स्थिति निर्मित होगी

- वर्षा में असंतुलन के कारण कही अधिक एवं कहीं कम बारिश होगी जिससे सूखे एवं बाढ़ की समस्या बनेगी।

- ऐसी विषम परिस्थिति के निर्मित होने से कृषि आधारित आजीविका प्रभावित होगी।

क्लाइमेट स्मार्ट विलेज

- जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से बचने के लिए तैयार की जा रही परियोजनाओ को वित्तीय सहायता प्रदान करना है ।
- इस हेतु केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत शासन ने एक कोष स्थापित किया है ।
- इस कोष के अंतर्गत क्लाइमेट स्मार्ट विलेज बनाने के लिए स्वीकृत की गयी है जो पूर्णतः केंद्रीय अनुदान आधारित है।

उद्देश्य

क्लाइमेट स्मार्ट विलेज बनाने का निम्नलिखित उद्देश्य है :

- ❑ मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से बचने (जोखिम को कम करने) के लिए ,
- ❑ मिट्टी एवं जल के संरक्षण,
- ❑ फसल की सूखा सहनशील किस्मो की खेती,
- ❑ कृषि द्वारा ग्रीन हॉउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने तथा
- ❑ मौसम पूर्वानुमान आधारित कृषि की नवीन पद्धतियों पर आधरित परियोजना है |

जलवायु परिवर्तन की जोखिम कम करना

- आजकल जलवायु परिवर्तन को लेकर विश्वभर में चर्चा हो रही है। जलवायु परिवर्तन का कु-प्रभाव विदेशों के साथ ही भारत में भी देखा जा रहा है ।
- पिछले तीन चार वर्षो के दौरान बदलती जलवायु से जन-जीवन पर तो असर पडा ही है, साथ ही खाद्यान्न उत्पादन भी प्रभावित हो रहा है ।

ईकोसिस्टम / पारिस्थितिक तंत्र

विलेज ईकोसिस्टम

परियोजना की गतिविधियाँ:

- उर्जा प्रबंधन
- जल प्रबंधन
- मृदा पोषक तत्व प्रबंधन
- बीज एवं फसल प्रबंधन
- मौसम पूर्वानुमान एवं कृषि मौसम सलाहकार आधारित खेती,
- जलवायु परिवर्तन विषय पर प्रशिक्षण एवं क्षमता का विकास

उर्जा प्रबंधन

- ✓अपरंपरागत (unconventional)उर्जा प्रयोगों को बढ़ावा देना
- ✓कम उर्जा खपत वाले उपाय जैसे (एलईडी लाईट, गोबर गैस संयंत्र का प्रयोग)
- ✓फसल अवशेषों को न जलाने के संबंध में जागरूकता
- ✓कम उर्जा खपत वाले सिंचाई पम्प का प्रयोगों को बढ़ावा देना

जल प्रबंधन

✓जल संग्रहण (water harvesting) के लिए खेतों में लाइन्ड (पालीथीन की परत) तालाबों का निर्माण

✓फसलों की कम पानी के उपयोग वाली तकनीक से खेती

मृदा पोषक तत्व प्रबंधन

✓मिट्टी की कम जुताई, समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन, लीफ कलर चार्ट, मिट्टी में सही समय, सही स्थान एवं खेत में खड़ी फसल के रंग के अनुसार पोषक तत्व की पूर्ति करना

बीज एवं फसल प्रबंधन

✓सूखा सहनशील चारे एवं फसलों की खेती

✓कृषि के साथ वानिकी (Forestry), चारे का बैंक बनाकर संग्रहण एवं वितरण करना

मौसम पूर्वानुमान एवं कृषि मौसम सलाहकार आधारित खेती

✓मौसम वेधशाला के स्थापना

✓जिला स्तर पर मौसम पूर्वानुमान आधारित खेती / कृषि

✓ एवं कृषि मौसम परामर्श सेवाएं

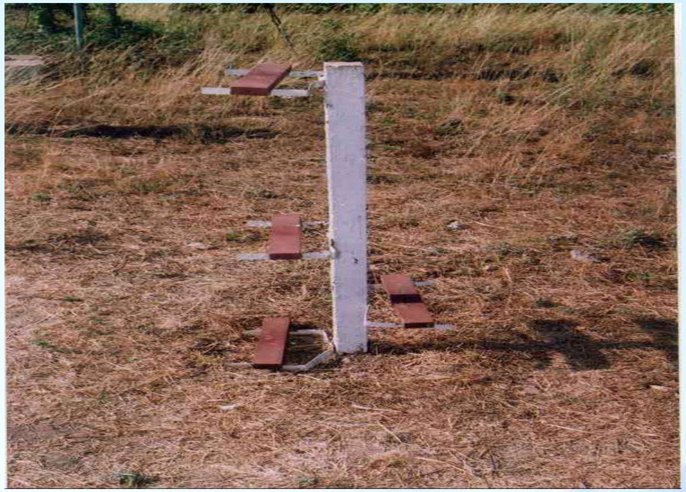

ओस मापी

मानक ओपन पैन वाष्पनमापी

स्थापित लाइसीमीटर

स्वचालित मौसम स्टेशन

जलवायु परिवर्तन विषय पर प्रशिक्षण एवं क्षमता का विकास

- ✓ट्रेनिंग, कार्यशाला एवं एक्सपोज़र विजिट के माध्यम से ग्राम स्तर पर सभी लोगों (विद्यार्थियों, किसानो, महिलाओं, श्रमिकों आदि) का जलवायु परिवर्तन विषय पर जागरूकता
- ✓केंद्र एवं राज्य शासन द्वारा अन्य योजनाओ के साथ एकीकरण

उपसंहार

हमारा नजरिया तथा प्रयास –
गावों में जैवविविधता के संरक्षण, उपयोग एवं जैवसंसाधनों से प्राप्त होनेवाला लाभ पर आधरित ऐसा विकास जो कि जलवायु परिवर्तन कि जोखिम कम करें

"पृथ्वी सभी मनुष्यों की जरूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदान करती है, लेकिन लालच पूरा करने के लिए नहीं"

आभार

1) मौसम विज्ञान के महानिदेशक, नई दिल्ली

2) श्रीमती एस.व्ही.वैद्य, प्रमुख, एमटीआय के निजी सहायक

धन्यवाद